चललीं बहरवा से, कनवाँ परल मोरा,

सती का बिपति के मोटरिया बिदेसिया।

हउईं बटोहिया, लागल जब मोहिया,

त जोहिया लगाइ कर आईंलीं बिदेसिया।

तोहरा जननवा के, असरा लागल बाटे

कब आइके देब दरसनवां बिदेसिया।

3. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए :

(i) बुझौवल (7)

अथवा

सोहर

(ii) खयाल (6)

अथवा

लोरिक

munotes.in

7 Dec

[This question paper contains 4 printed pages.]

07 DEC 2022

Your Roll No. ....

Chanakya Puri, New Delhi-110021 ★ Maitreyi College ★ LIBRARY

Sr. No. of Question Paper : 4276 C

Unique Paper Code : 12057501

Name of the Paper : हिंदी की मौखिक एवं लोक साहित्य परंपरा

Name of the Course : B.A (H) Hindi

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (12×4=48)

(क) मौखिक साहित्य की अवधारणा स्पष्ट करते हुए लोक साहित्य पर विचार कीजिए।

अथवा

लोककथा एवं लोकनाट्य की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

(ख) ऋतु गीतों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

अथवा

जँतसारी स्त्री जीवन का मार्मिक चित्रण है - विश्लेषण कीजिए।

(ग) लोकगाथा सारङ्गा सदावृक्ष का परिचय दीजिए।

अथवा

वीरगाथा आल्हा का सोदाहरण परिचय दीजिए।

(घ) रामलीला की कतिपय विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

बिदेसिया नाट्य शैली के वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिए।

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (7+7=14)

(क) माँ ने ऊणीज दोनी में खीर ने राबड़ी राँधी. जदे जीमण बैठ्या तो अपणा बेटा की थाली में खीर मेली, न बउ आगे राबड़ी सूरजनारायण के खीर अच्छी लगी तो बडई करवा लागा. पण उनकी वेराँ के धणी की या बात समज में नी अइ। वा मनिज मन सोचवा लागि के आज खीर बणिज काँ है, जो ई खीर का वर्गीकरण असा गुण गई रिया है. जिमी चूँठी ने सुराजनारायण आराम करने गया, तो पास में जई ने बेरां ने पुछया के तम खीर को बडाइ करी रया।

अथवा

इंद्र कै बात सुनिके भगवान का संतोषु भा औ तब उई जमराज ते बोले - महाराज! यो तुम्हइँ गड़बड़घोटाला कीन हउ। अब तुम्हहीं येहका पव्यारौ. किरपा करिकै ई पापिन का फिर ते धरती माँ छांड़ि आव; काहे ते, पाप गंगा के नहाए ते नहीं, अच्छे करमन ते खतम ह्वात हैं। अब किरपा करिकै अइस भूल न किहेंव।

(ख) ए नी बांस घुघुति रुण झूण

मेरी ईजू सुणलि रूण झूण

पार धारा का रूखा का भूणी

के चाँणोछी पागलि तू उड़ि

तेरी दाशा देखि लागि जाँछ

मैं निश्वास घुघुति रूण झूण

ए नी बांस

अथवा

कायापुर घर हउए, पानी से बनावल गउए,

अचरज अकथ ह नाम हो बिदेसिया।

munotes.in